मत्स्योद्योग विभाग में संचालित बेस्ट मैनेजमेन्ट प्रेक्टिसेस

1– जलाशयों में मत्स्योत्पादन वृद्धि हेतु केज कल्चर :–

प्रदेश के जलाशयों से अधिकतम सतत उत्पादन लेने के लिए केज स्थापित कर मत्स्य पालन का कार्य किया जा रहा है । मत्स्य महासंघ के अधिपत्य के इंदिरा सागर, गांधीसागर एवं हलाली जलाशय एवं विभाग अन्तर्गत दाहोद जलाशय जिला रायसेन में केज स्थापित कर पंगेशियस मछली का पालन किया जा रहा है। जिसके परिणाम उत्साहवर्द्धक हैं । एक केज से जिसका आकार 6x4x4 मीटर (24 घनमीटर) है, से तीन से पांच टन मत्स्योत्पादन हो रहा है जिससे प्रदेश की मत्स्य सहकारी समितियां प्रोत्साहित होकर बेस्ट मैनेजमेन्ट प्रेक्टिसेस को अपना कर अधिक आय अर्जित कर अपने आर्थिक एवं सामाजिक स्तर में सुधार कर सकेंगी, साथ ही उपभोक्ता को प्रोटीनयुक्त ताजी मछली उपलब्ध होगी ।

2– जलाशयों में मत्स्योत्पादन वृद्धि हेतु पेन में मत्स्य बीज संवर्धन :–

जलाशयों की मत्स्योत्पादकता बड़े आकार के मत्स्य बीज संचयन पर निर्भर करती है। बड़े आकार के मत्स्य बीज संचयन हेतु परिवहन की लागत राशि कम करने परिवहन के दौरान मृत्यु दर से बचने एवं समान जल की गुणवत्ता में ही मत्स्य बीज संवर्धन की उद्देश्य पूर्ति हेतु जलाशयों के एक भाग को जाल से पृथक कर पेन निर्माण कर मत्स्य बीज संवर्धन कर अधिक मत्स्य उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

प्रदेश में उमरिया, मण्डला, खण्डवा एवं रायसेन जिले के जलाशयों में पेन निर्मित कर कतला, रोहू, मृगल एवं ग्रास कार्प का 100 मिली मीटर आकार का मत्स्य बीज संवर्धन करने के उपरांत जलाशयों में संचयन किया जा रहा है। जिससे मत्स्य पालन में लागत राशि कम होकर अधिक मत्स्य उत्पादन के साथ–साथ अधिक आय भी प्राप्त हो रही है।

3– मत्स्योत्पादन वृद्धि हेतु ग्रामीण तालाबों में मत्स्य आहार प्रबंधन योजना :–

प्रदेश में ग्रामीण तालाबों में मत्स्योत्पादन वृद्धि के लिये ग्रामीण तालाबों में मत्स्य आहार प्रबंधन योजना अन्तर्गत फारमुलेटेड आहार प्रदाय किया जा रहा है। योजनान्तर्गत वर्तमान में हो रहे मत्स्य उत्पादन को 2500 किलोग्राम/हेक्टेयर तक बढ़ाया जाना है। योजना में इकाई लागत का 90 प्रतिशत अर्थात रूपये 45,000/– प्रति हेक्टेयर की दर से हितग्राहियों को वित्तीय सहायता अनुदान के रूप में दी जाती है तथा योजना की इकाई लागत का 10 प्रतिशत अर्थात रूपये 5,000/– प्रति हेक्टेयर की दर से हितग्राहियों द्वारा वहन किया जाता है। ग्रामीण तालाबों में मत्स्य आहार प्रबंधन योजनान्तर्गत 902 हेक्टेयर जलक्षेत्र लाया गया है।

4– मत्स्योत्पादन वृद्धि हेतु जयंती रोहू मछली के ब्रूड बैंक की स्थापना :–

अनुवांशिक रूप से उन्नत जयंती रोहू के ब्रूड बैंक की स्थापना मत्स्य बीज प्रक्षेत्र मुरझड़ जिला बालाघाट, मत्स्य बीज प्रक्षेत्र जेवनारा जिला सिवनी,मत्स्य बीज प्रक्षेत्र गोकुलपुर जिला जबलपुर, मत्स्य बीज प्रक्षेत्र पौण्डी मैहर जिला सतना एवं मत्स्य बीज प्रक्षेत्र दहोद जिला रायसेन में की गई । प्रजनन उपरांत मत्स्य बीज प्रदेश के अन्य मत्स्य बीज प्रक्षेत्रों एवं निजी मत्स्य पालकों को प्रदाय किया गया जिससे अधिक मत्स्य उत्पादन में वृद्धि होगी ।

5– प्रदेश के मध्यम एवं वृहद जलाशयों में झींगा पालन :–

प्रदेश के मध्यम एवं वृहद जलाशयों में मत्स्य महासंघ की झींगा पालन नीति अनुसार इन्दिरासागर एवं भीमगढ़ जलाशय में क्रमशः 3.50 लाख एवं 301.00 लाख झींगा बीज का संचयन किया गया। जो लगभग 150 से 200 ग्राम वजन की वृद्धि प्राप्त कर चुका है। दिनांक 30.09.2015 तक 1341 किलोग्राम झींगे का उत्पादन प्राप्त हुआ है, जो कि एक उत्साहवर्धक परिणाम है।